

२ मुखी रूप्राक्ति

प्रतीक : अर्धनारीश्वर शिव और शक्ति का एकीकृत रूप



॥द्विवक्त्र हरगौरी स्याद् गोवधाघघनाशकृत् ॥

Dvivaktra Hargauri Syad Govadhadyaghnashakrit

पुराणों के अनुसारः दो मुखी रुद्राक्ष को असर्नारीश्वर (शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप) का आशीर्वाद प्राप्त है, जो संपूर्ण संतुलन और बिना शर्तों के प्रेम का प्रतीक है।

ज्योतिषीय संबंध :

चंद्र ग्रह से संबंधित — भावनाओं को संतुलित करता है और मानसिक स्पष्टता बढ़ाता है। कर्क, तुला जैसे राशियों के लिए लाभकारी और चंद्र दोष या भावनात्मक अस्थिरता से पीड़ित लोगों के लिए भी उपयुक्त।

महत्व व लाभ :

- यह शिव (पुरुष ऊर्जा) और शक्ति (स्त्री ऊर्जा) के दिव्य मिलन का प्रतीक है।
- विवाह, साझेदारी और पारिवारिक रिश्तों में सामंजस्य लाता है।
- भावनात्मक घाव, भ्रम और अकेलेपन को ठीक करता है।
- मस्तिष्क के दोनों गोलार्धों को संतुलित करता है — बुद्धि + भावना।
- द्वैत का भय दूर करता है और आत्म-स्वीकृति को बढ़ावा देता है।

भावनात्मक/रिश्तों से जुड़े लाभ :

- दूटे हुए विवाह को पुनर्स्थापित करता है और प्रेम संबंधों को मजबूत करता है।
- अलगाव, तलाक या दिल टूटने से उत्पन्न मानसिक आघात को ठीक करने में सहायक।
- आत्म-प्रेम या आंतरिक संघर्ष से जूझ रहे लोगों के लिए उपयोगी।

व्यावसायिक / भौतिक लाभ :

- परामर्शदाता, चिकित्सक, दंपति, राजनयिक और कलाकारों के लिए उपयुक्त।
- साझेदारी वाले व्यवसाय, विवाह परामर्श और टीम वर्क में सहायक।

कैसे धारण करें :

धारण करने का दिनः— सोमवार या शुक्रवार।

सामग्रीः— लाल या सफेद धागा, चांदी या सोने की चेन।

स्थानः— गले में, हृदय चक्र के पास।

विकल्पः— इसे शयनकक्ष या घर के संबंध क्षेत्र में भी रखा जा सकता है।

ऊर्जावान करने की विधि (प्राण प्रतिष्ठा) :

- सोमवार या शुक्रवार की सुबह स्नान के बाद पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें।
- रुद्राक्ष को पंचामृत से और फिर शुद्ध जल से धोएं।
- इसे सफेद वस्त्र या शिव-शक्ति की फोटो पर रखें।
- चंदन लगाएं और सफेद फूल अर्पित करें।
- दीपक व अगरबत्ती जलाकर नीचे दिए गए मंत्र का 108 बार जाप करें।
- शिव-पार्वती की संयुक्त रूप से प्रार्थना करें।
- शांत मन और रिश्तों से जुड़ी भावना (संकल्प) के साथ इसे धारण करें।

धारण एवं जाप का मंत्र :

ॐ नमः (Om Namah)

वैदिक/उन्नत मंत्र :

ॐ श्री अर्धनारीश्वराय नमः

(Om Shreem Ardhanarishwaraya Namah)

अनुशंसित जाप संख्या

सोमवार को या प्रतिदिन 108 बार।

सावधानियाँ :

- नकारात्मक बोलचाल या विवाद करते समय न पहनें।
- मानसिक और शारीरिक शुद्धता बनाए रखें।
- अधिक क्रोध, अंतिम संस्कार या अंतरंग गतिविधियों के समय न पहनें।
- नियमित सफाई करें; रसायन या साबुन से बचाव करें।

कौन पहन सकता है :

- जो प्रेमपूर्ण, स्थिर संबंध या विवाह की तलाश में हैं।
- जो संघर्ष, अलगाव या पारिवारिक समस्याओं से जूझ रहे हैं।
- जो शिवदृशक्ति की आंतरिक संतुलन की साधना में हैं।
- पुरुष एवं महिलाएं दोनों पहन सकते हैं, विशेषतः विवाहित जोड़े।

रुद्राक्ष की देखभाल कैसे करें :

- हर सप्ताह जल से साफ करें; हर महीने हल्का तेल (जैसे तिल) लगाएं।
- कठोर साबुन, परफ्यूम और रसायनों से दूर रखें।
- न पहनने पर सूती कपड़े में रखें।
- किसी और को देने से बचें।

विशेष संदेश :

दो मुख्यी रुद्राक्ष सिर्फ एक मनका नहीं, प्रेम और संतुलन का एक दिव्य बीज है।
इसे सारण करना ऐसा है जैसे शिव और शक्ति दोनों को अपने भीतर स्थान देना
संतुलन, करुणा और एकत्र का अनुभव।

॥ हर हर महादेव ॥